

Ghaflat (Gujarati)

# ગાફલત

- સોને કી ઈંટ
- આંખોં મેં પિઘલા હુવા સીસા
- રોતા હુવા દાખિલે જહન્નમ હોગા
- અકીકે કે 25 મ-દની ફૂલ
- મૌત કે તીન કાસિદ

શીખે તરીકત. અમીરે અહલે સુન્નત. બાલિયે દા'વતે ઇસ્લામી. હાસ્ત અલ્લામા મૌલાના અબૂ મિલાવ

મુહમ્મદ ઇલ્યાસ અત્તાર કાદિરી ૨-ઝવી

کتابت برکت  
الکتاب

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

### કિતાબ પઢને કી દુઆ

અઝ : શૈખે તરીકત, અમીરે અહલે સુન્નત, બાનિયે દા'વતે ઈસ્લામી, હઝરત અલ્લામા મૌલાના અબૂ બિલાલ મુહમ્મદ ઈલ્યાસ અત્તાર કાદિરી ર-ઝવી دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ  
દીની કિતાબ યા ઈસ્લામી સબક પઢને સે પહલે જૈલ મેં દી હુઈ દુઆ પઢ લીજિયે إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ જો કુઇ પઢેંગે યાદ રહેગા. દુઆ યેહ હે :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ  
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

તરજમા : ઐ અલ્લાહ ઈઝ્ઝૈરુલ્લિહ ! હમ પર ઈલ્મો હિક્મત કે દરવાઝે ખોલ દે ઔર હમ પર અપની રહમત નાઝિલ ફરમા ! ઐ અ-ઝમત ઔર બુરુગી વાલે. (المستطرف ج ١، دار الفكر بيروت)  
નોટ : અવ્વલ આખિર એક એક બાર દુરૂદ શરીફ પઢ લીજિયે.

તાલિબે ગમે મદીના  
વ બકીઅ  
વ મફિરત  
13 શવ્વાલુલ મુકર્રમ 1428 હિ.



### ગફલત

યેહ રિસાલા (ગફલત)

શૈખે તરીકત, અમીરે અહલે સુન્નત, બાનિયે દા'વતે ઈસ્લામી હઝરત અલ્લામા મૌલાના અબૂ બિલાલ મુહમ્મદ ઈલ્યાસ અત્તાર કાદિરી ર-ઝવી ઝિયાઈ دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ ને ઉર્દૂ ઝબાન મેં તહરીર ફરમાયા હૈ.

મજલિસે તરાજિમ (દા'વતે ઈસ્લામી) ને ઈસ રિસાલે કો ગુજરાતી રસ્મુલ ખત મેં તરતીબ દે કર પેશ કિયા હૈ ઔર મક-ત-બતુલ મદીના સે શાએઅ કરવાયા હૈ. ઈસ મેં અગર કિસી જગહ કમી બેશી પાએં તો મજલિસે તરાજિમ કો (બ ઝરીઅએ મકતૂબ, ઈ-મેઇલ યા SMS) મુત્તલઅ ફરમા કર સવાબ કમાઈયે.

રાબિતા : મજલિસે તરાજિમ (દા'વતે ઈસ્લામી)

મક-ત-બતુલ મદીના, સિલેક્ટેડ હાઉસ, અલિફ કી મસ્જિદ કે સામને,  
તીન દરવાઝા, અહમદઆબાદ-1, ગુજરાત, ઈન્ડિયા

MO. 9374031409 • E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

# गङ्गलत<sup>1</sup>

गङ्गलत उडा कर येह रिसाला (23 सङ्खलात) मुकम्मल पढ लीजिये  
إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ आप अपने दिल में उलयल मडसूस इरमाअेंगे.

## दुइद शरीफ़ की इंगलत

सरकारे मदीना, राहते कल्लो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना  
صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने आइयत निशान है : औ लोगो !  
बेशक बरोजे कियामत उस की दइशतों और हिसाब कितान से जलद नजात  
पाने वाला शप्स वोड होगी जिस ने तुम में से मुज पर दुन्या के अन्दर ब  
कसरत दुइद शरीफ़ पढे होंगे. (फ़रदूसु अखबार ज ० व ३७० हदलथ १२१०)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

## सोने की ईंट

मन्कूल है : अक नेक शप्स को कहीं से सोने की ईंट हाथ लग गई.  
वोड दौलत की मडुबत में मस्त हो कर रात भर तरड तरड के मन्सूबे  
भांधता रहा के अब तो मैं बहुत अस्थे अस्थे जाने जाउंगी, बेहतरीन

4 مدینہ  
1 : येह बयान अभीरे अडले सुन्नत كأنك بركاتهم العالیہ ने तबलीगे कुरआनो सुन्नत की  
आलमगीर गैर सियासी तहरीक द्वा'वते ईस्लामी के अडमदआबाद (अल हलन्द) में होने  
वाले तीन रोज़ा सुन्नतों (भरे) ईजतिमाअ (30 रजब 1418 सि.हि./30-12-1997) में  
इरमाया था. तरमीम व ईजाई के साथ तहरीरन हाजिरे बिदमत है.

-मजलसे मक-त-अतुल मदीना

करमाने मुस्तकاً : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर ओक बार दुरदे पाक पढा अदलाह उरु उरु उस पर दस रडमतें भेजता है. (स्म)

दिबास सिलवाउिंगा और बहुत सारे पुदाम अपनाउिंगा. अल गरज मालदार बन जाने के सभब वोह राहतों और आसाईशों के तसव्वुरात में गुम हो कर उस रात रब्बे अकबर उरु उरु से यकसर गाङ्गल हो गया. सुब्ह ईसी धन की धुन में मगन मकान से निकला, ईत्तिफाकन कब्रिस्तान के करीब से उस का गुजर हुवा, क्या देभता है के ओक शप्स ईटें बनाने के लिये ओक कब्र पर मिट्टी गूंध रहा है, येह मन्जर देभ कर यकदम उस की आंभों से गङ्गलत का पर्दा उट गया और ईस तसव्वुर से उस की आंभों से आंसू जारी हो गये के शायद मरने के बा'द मेरी कब्र की मिट्टी से ली लोग ईटें बनाअेंगे, आह ! मेरे आलीशान मकानात और उम्दा मलबूसात वगैरा धरे के धरे रह जाअेंगे दिहाजा सोने की ईट से दिल् लगाना तो जिन्दगी को सरासर गङ्गलत में गंवाना है, हां अगर दिल् लगाना ही है तो मुजे अपने प्यारे प्यारे अदलाह उरु उरु से लगाना याहिये. युनान्ये उस ने सोने की ईट तर्क की और जोहूँ कनाअत ईप्तिवार की.

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

### गङ्गलत के अरबाब

भीठे भीठे ईस्लामी लाईयो ! वाकेई दुन्या की कसरत की सूरत में मिलने वाली ने'मत में सरासर गङ्गलत का अन्देशा है, जो दुन्यवी ने'मत से दिल् लगाता है वोह गङ्गलत का शिकार हो कर रह जाता है, गङ्गलत ईर गङ्गलत है, गङ्गलत अन्दे को रब्बुल ईज्जत उरु उरु से दूर कर देती है.

करमाने मुस्तकी عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जो शप्स मुज पर दुइदे पाक पढेना भूल गया वोह जन्त की रास्ता भूल गया. (पु. १)

अच्छी तिजरात भी ने'मत है, दौलत भी ने'मत है, आलीशान मकान भी ने'मत है, उम्दा सुवारी भी ने'मत है, मां बाप के लिये औलाद भी ने'मत है किसी भी दुन्यवी ने'मत में ज़रूरत से ज़ियादा भशगूदिय्यत बाईसे गङ्गलत है. युनान्ये पारह 28 सू-रतुल मुनाफ़ि कून की आयत 9 में ईशाद होता है :

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُلْهِكُمْ  
أَمْوَالُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ عَنْ  
ذِكْرِ اللَّهِ ۚ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ  
فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْخٰسِرُونَ ①

तर-ज-मअे कन्जुल ईमान : अै ईमान वालो ! तुम्हारे माल न तुम्हारी औलाद कोई चीज़ तुम्हें अद्लाह (عَزَّ وَجَلَّ) के जिक से गाङ्गिल न करे और जो अैसा करे तो वोही लोग नुक्सान में हें.

ईस आयते मुकदसा से उन लोगों को दर्सो ईध्रत ढासिल करना याछिये के जिन को नेकी की द्दा'वत पेश की जाती है और नमाज के लिये बुलाया जाता है तो कड दिया करते हें : "जनाब ! उम तो अपने रिज़्क की इक में लगे रहते हें, रोजी कमाना और बाल बच्चों की षिदमत करना भी तो ईबादत है उमें जभ ईस से इरसत मिलेगी तो आप के साथ भस्जिद में भी यलेंगे." यकीनन अैसी बातें गङ्गलत ही करवाती है.

### मुई की यीजो पुकार बेकार है

सिर्फ और सिर्फ दुन्या के धन की इरिवानी की धुन में भगन रहने वालों, हुसूले माल की षातिर दुन्या के मुप्तलिइ भमालिक में लटक्ते इरने वालों भगर भस्जिद की ढाजिरी से

करमाने मुस्तफी صلى الله تعالى عليه وسلم: जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्रुद पाक न पढा तबकीक  
 वोह बढ भप्त हो गया. (उरुन)

कतराने वालों, अपने मकानात के डेकोरेशन पर पानी की तरह पैसा  
 बढाने वालों मगर राहे खुदा جَزَّوَجَزَّ में अर्थ करने से जो युराने वालों,  
 दौलत में ठज्जके के लिये मुप्तलिफ़ गुर अपनाते वालों मगर नेकियों  
 में अ-र-कत के मुआ-मले में बे नियाज रहने वालों को ज्वाबे गङ्गलत  
 से बेदार हो कर जटपट तौबा कर लेनी चाहिये कहीं ऐसा न हो के  
 मौत अथानक आ कर रोशनियों से जग-मगाते कमरे में शोम के  
 आराम देह गद्दे से मुजय्यन भूब सूरत पलंग से उठा कर कीडे मकोड़ों  
 से उभरती हुई भौंफनाक अंधेरी कब्र में सुला दे और वोह चिल्लाते  
 रह जाअें के या अल्लाह جَزَّوَجَزَّ ! मुझे दोबारा दुन्या में भेज दे ताके  
 वहां जा कर मैं तेरी ठबाहत करूं. मौला (جَزَّوَجَزَّ) ! दोबारा दुन्या में  
 पछोंया दे मैं वा'दा करता हूं अपना सारा माल तेरी राह में लुटा  
 दूंगा..... पांथों नमाजें मस्जिद के अन्दर पहली सफ़ में तकबीरे  
 उला के साथ बा जमाअत अदा करूंगा, तहज्जुद भी कभी नहीं  
 छोडूंगा बल्के मस्जिद ही में पडा रहूंगा..... दाढी तो दाढी जुल्के  
 भी बढा लूंगा..... सर पर हर वक्त ठमामा शरीफ़ का ताज सजाओ  
 रहूंगा..... या अल्लाह جَزَّوَجَزَّ ! मुझे वापस भेज दे..... अक  
 बार फिर मोहलत दे दे दुन्या से फ़ेशन का जातिमा कर के हर तरफ़  
 सुन्नतों का परथम लहरा दूंगा..... परवर दगार جَزَّوَجَزَّ ! सिर्फ़  
 और सिर्फ़ अक बार मोहलत अता करमा दे ताके मैं भूब नेकियां कर  
 लूं..... रात दिन गुनाहों में मशगूल रहने वाले गङ्गलत शिआरों  
 की मौत के बा'द यीषो पुकार यकीनन ला हासिल रहेगी. कुरआने  
 पाक पहले ही से मु-तनब्बेह (या'नी जबरदार) कर युका है युनान्ये

करमाने मुस्तक़ा: مَسَى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ: जिस ने मुज पर दस मरतबा सुबह और दस मरतबा शाम दुइदे पाक पढा।  
(उसे क्रियामत के दिन मेरी शक्राअत मिलेगी. (अल-अम))

पारह 28 सू-रतुल मुनाफ़िकून की आयत 10 और 11 में ईशाद होता है :

وَأَنْفِقُوا مِنْ مَّا رَزَقْنَاكُمْ مِنْ قَبْلِ  
 أَنْ يَأْتِيَّ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُولَ رَبِّ  
 لَوْلَا أَخَّرْتَنِي إِلَىٰ أَجَلٍ قَرِيبٍ  
 فَأَصَّدَّقَ وَأَكُن مِّنَ الصَّالِحِينَ ۝  
 وَلَنْ يُؤَخِّرَ اللَّهُ نَفْسًا إِذَا جَاءَ أَجَلُهَا  
 وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝

तर-ज-मअे क-जुल ईमान : और हमारे  
 दिये में से कुछ हमारी राह में भर्य करो  
 कबल ईस के, के तुम में किसी को मौत आये  
 फिर कहने लगे, औ मेरे रब ! तूने मुझे  
 थोडी मुदत तक क्यूं भोडलत न दी के मैं  
 स-दका देता और नेकों में छोता, और  
 हरगिज अद्लाह (عَزَّوَجَلَّ) किसी जान को  
 भोडलत न देगा जब उस का वा'दा आ  
 जाये और अद्लाह (عَزَّوَجَلَّ) को तुम्हारे  
 कामों की ખबर है.

दिया गाङ्गल न हो यकदम येह दुन्या छोड जाना है बगीचे छोड कर पाली जमीं अन्दर समाना है  
 तेरा नासुक बदन भाई जो बैठे सैज कूलों पर येह छोगा अक दिन बेज्रां ईसे किरमों<sup>1</sup> ने पाना है  
 तू अपनी मौत को मत भूल कर सामान यवने का जमीं की षाक पर सोना है ईटों का सिरडाना<sup>2</sup> है  
 न बेली<sup>3</sup> हो सके भाई न भेटा बाप ते माई<sup>4</sup> तू क्यूं किरता है सौदाई<sup>5</sup> अमल ने काम आना है  
 कहां है ज़रे न मरुई ! कहां है तप्ते किराँनी ! गअे सब छोड येह डानी अगर नादान दाना है  
 अजीजा ! याद कर जिस दिन के ईजराईल आवेंगे न जावे कोई तेरे संग अकेला तूने जाना है  
 जहां के शगल<sup>6</sup> में शागिल<sup>7</sup> भुदा के जिक से गाङ्गल करे दा'वा के येह दुन्या मेरा दाईम<sup>8</sup> ठिकाना है

गुलाम ईक दम न कर गङ्गलत डयाती<sup>9</sup> पे न हो गुरा<sup>10</sup>  
 भुदा की याद कर हर दम के जिस ने काम आना है

1 : कीडों 2 : तक्या 3 : मददगार 4 : मां 5 : पागल 6 : काम 7 : मशगूल 8 : हमेशा  
 9 : जिन्दगी 10 : मग़र्र

﴿فَرَمَانِ مُوسَى عَلَيْهِ السَّلَامُ﴾ : جِس کے پاس میرا تیک لُٹا اور اِس نے مُجھ پَر دُرُودِ شَرِیْفَہ ن پڈا اِس نے جُڈا کِی . (مہاراجن)

### अनोपि नदामत

“मुका-श-इतुल कुलूब” में है : डउरते सय्यिदुना शैभ अबू अली दककक **وَحَمَةَ اللَّهِ الرَّزْأُ عَلَيْهِ** इरमाते हैं : अेक बहुत अडे वलिय्युल्लाड सप्त भीमार थे, मैं ंयादत के विये डलिर हुवा, र्द गिर्द मो’तकिदीन का हुजूम था, वोड बुजुर्ग **وَحَمَةَ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** रो रहे थे. मैं ने अर्ज की : **औ शैभ !** क्या दुन्या छूटने पर रो रहे हैं? इरमाया : नहीं, बडके नमाजें कजा डोने पर रो रहा हूँ. मैं ने अर्ज की : हुजूर ! आप की नमाजें क्यूंकर कजा डो गईं? इरमाया : मैं ने जब त्नी सजदा किया तो गइलत के साथ और जब सजदे से सर उठाया तो गइलत के साथ और अब गइलत ही में मौत से डम-आगोश डो रहा हूँ, इर अेक आडे सर्द ढिले पुरढर्द से षीय कर चार अ-रबी अशआर पढे जिन का तरजमा येड है : **﴿1﴾** मैं ने अपने डशर, कियामत के ढिन और कध्र में अपने रुषसार के पडा डोने के बारे में गौर किया **﴿2﴾** र्दतनी र्जुजत व रिइअत के आ’द मैं अकेला पडा डोइंगा और अपने जुर्म की बिना पर रहूँ (या’नी गिरवी) डोइंगा और आक डी मेरा तक्या डोगी **﴿3﴾** मैं ने अपने डिसाब की तवालत और नामअे आ’माल ढिये जाने के वक्त की रुस्वाई के बारे में त्नी सोचा **﴿4﴾** मगर अै मुजे पैदा करने वाले और मुजे पालने वाले ! मुजे तुज से रहमत की उम्मीद है, तू डी मेरी भताओं को बषशने वाला है. (تُكاشِةُ الْقُلُوبِ ص ١٢)

### रोता हुआ दाजिले जहन्नम होगा

भीडे भीडे इस्लामी आइयो ! इंस डिकायत में डिस कदर र्दत है.

जरा र्दन अड्लाड वालों को ढेजिये जिन का डर लड्डा यादे र्दलाडी **عَزَّوَجَلَّ**



करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर रोज़ जुम्मा दुरुद शरीफ़ पढ़ेगा मे डियामत के दिन उस की शफ़ाअत करेगा. (कोरानल)

में बसर छोता है मगर फिर भी ईन्किसारी का आलम येह है के अपनी ईबादत व रियाजत को किसी भातिर में नहीं लाते और अल्लाह ﷻ की बे नियाजी और उस की भुफ़या तदबीर से उरते हुअे गिया व ज़ारी करते हैं. उन गङ्गलत के मारों पर सद करोड अफ़सोस के, नेकी के नून का नुक्ता तक जिन के पल्ले नहीं, ईभ्लास का दूर दूर तक नामो निशान नहीं मगर डाल येह है के अपनी ईबादतों के बुलन्द बांग दारवे करते नहीं थकते ! अल्लाह ﷻ के नेक बन्दे गुनाहों से मडफूज होने के बा वुजूद भौंके ईलाही ﷻ से थर-थराते कप-कपाते और टपटप आंसू गिराते हैं, मगर गङ्गलत शिआर बन्दों का डाल येह है के बे धउक मा'सियत का सिव्सिला यलाते, अपने गुनाहों का आम अे'लान सुनाते और फिर ईस पर जोर जोर से कडूके लगाते ज़रा नहीं लज़ते, कान भोल कर सुनिये ! हज़रते सय्यिदुना ईब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا इरमाते हैं : "जो हंस हंस कर गुनाह करेगा वोह रोता हुवा जहन्नम में दाखिल होगा."

(مُكَاشَفَةُ الْقُلُوبِ ص २१०)

### अगर ईमान बरबाद हो गया तो.....

हंस हंस कर जूट भोलने वालों, हंस हंस कर वा'दा भिलाई करने वालों, हंस हंस कर भिलावट वाला माल बेचने वालों, हंस हंस कर इल्म डिरामे देबने वालों और गाने बाजे सुनने वालों, हंस हंस कर मुसल्मानों को सताने और भिला ईज्जते शर-ई उन की हिल आज़ारियां करने वालों के लिये लभउअे इकिया है, अगर अल्लाह ﷻ नाराज हो गया और उस के प्यारे मडभूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ गअे और गङ्गलत के सबब दीदा हिलेरी के साथ हंस हंस कर

इरमाने मुस्तफ़ा (عليه السلام) : मुज पर दुइदे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तदारत है. (अबुल)

गुनाहों का इरतिकाब करने के बाईस इमान बरबाद हो गया और जहन्नम मुकदर बन गया तो क्या बनेगा ! जरा दिल् के कानों से बुदाअे रहमान عَزَّوَجَلَّ का इरमाने इब्रत निशान सुनिये ! युनान्हे पारह 10 सू-रतुतौबह की आयत 82 में इशाद होता है :

فَلْيَصْحُقْهُوا قَلِيلًا وَّ لِيُبْكُوا

كَثِيرًا <sup>ع</sup>

तर-ज-मअे क-जुल इमान : तो उ-हें याहिये के थोडा हंसें और बहुत रोअें.

### मौत के तीन कासिद

म-कूल है : हजरते सय्यिहुना या'कूब عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام और हजरते सय्यिहुना इजराईल म-लकुल मौत عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام में दोस्ती थी. अेक बार जब हजरते सय्यिहुना म-लकुल मौत عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام आअे तो हजरते सय्यिहुना या'कूब عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने इस्तिफ़सार इरमाया के आप मुलाकात के लिये तशरीफ़ लाअे हैं या मेरी इह कब्ज करने के लिये ? कहा : मुलाकात के लिये. इरमाया : मुजे वफ़ात देने से कबल मेरे पास अपने कासिद भेज देना. म-लकुल मौत عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने कहा : मैं आप की तरफ़ दो या तीन कासिद भेज दूंगा. युनान्हे जब इह कब्ज करने के लिये म-लकुल मौत عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام आअे तो आप عَلَى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने इशाद इरमाया : आप ने मेरी वफ़ात से कबल कासिद भेजने थे वोह क्या हुअे ? हजरते सय्यिहुना म-लकुल मौत عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने कहा : सियाह या'नी काले बालों के बा'द सफ़ेद बाल, जिस्मानी ताकत के बा'द कमजोरी और सीधी कमर के

करमान मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه و آله وسلم : तुम जडा भी हा मुज पर दुइद पढा क तुम्हारा दुइद मुज तड  
पडोयता है. (बरान)

भा'द कमर का जुकाव, औ या'कूब (عليه السلام) ! मौत से पहले ईन्सान की  
तरफ़ मेरे कासिद ही तो हैं. (مكاشفة القلوب ص २१)

अक अ-रबी शाईर के ईन दो अशआर में किस कदर ईब्रत है :

مَصَى الدَّهْرُ وَالْأَيَّامُ وَالذَّنْبُ حَاصِلٌ وَجَاءَ رَسُولُ الْمَوْتِ وَالْقَلْبُ غَافِلٌ  
نَعِيمُكَ فِي الدُّنْيَا عُرُورٌ وَحَسْرَةٌ وَعَيْشُكَ فِي الدُّنْيَا مُحَالٌ وَبَاطِلٌ

तर-ज-मअे अशआर : ﴿1﴾ वक्त और दिन गुजर गअे मगर गुनाह बाकी  
हैं, मौत का इरिश्ता आ पडोया और दिल् गाङ्गल हें ﴿2﴾ तुजे दुन्या में  
मिलने वाली ने'मते धोका और तेरे लिये बाईसे हसरत हें, और दुन्या  
में दार्थमी या'नी हभेशा बाकी रहने वाली राहतें पाने का तसव्वुर तेरी  
भाम भयाली (या'नी गलत इहमी) है. (البيضاء ص २२)

## बीमारी भी मौत का कासिद है

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! मा'लूम हुवा के मौत के आने से  
पहले म-लकुल मौत عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ अपने कासिद भेजते हैं. भयान कर्दा  
तीन कासिदीन के ईलावा भी अहादीसे मुबा-रका में मजीद  
कासिदीन का तजकिरा मिलता है. युनान्ये भरज, कानों और आंभों  
का तगथ्युर (या'नी पहले नजर अखी होना इर कमजोर पड जना  
और सुनने की ताकत की दुरुस्ती के भा'द बहुरा पन की आमद) भी मौत  
के कासिद हें. हम में से बहुत से लोग औसे होंगे जिन के पास  
म-लकुल मौत عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ के कासिद तशरीफ़ ला चुके होंगे मगर  
क्या कडिये ईस गङ्गलत का ! अगर सियाह बालों के भा'द सईद बाल  
होने लगते हैं डालां के येह मौत का कासिद है मगर बन्दा अपने दिल् को

ईरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ [जिस ने मुज पर दस भरतबा दुर्रुद पाक पढा अल्लाह उस पर सो रलमतें नाज़िल इरमाता है. (प्रां.)

ढारस देने के लिये कडता है के येड तो नज़ूले से ढाल सङ्केड हो गअे हैं !  
 ँसी तरड ढीमारी जो के ढौत का नुमायां कासिद है मगर ँस में ढी सरासर गङ्गलत ढरती जाती है ढावां के “ढीमारी” ढी के सढढ रोजाना ढे शुमार अङ्गुराद ढौत का शिकार ढोते हैं ! मरीज को तो ढहुत जियाद ढौत याद आनी याडिये के कया मा’लूम जो ढीमारी मा’ढूली लग रडी है वोडी ढोडलिक सूरत ँप्तियार कर के आन की आन में इना के घाट उतार दे इर अपने रोअें धोअें, दुश्मन ढुशियां मनाअें और मरने वाला ढौत से गाङ्गिल मरीज मनों ढिड्डी तले अंधेरी कड्र में जा पडे !  
 आड ! अढ मरने वाला ढोगा और उस के अखे ढुरे आ’ढाल.

### जहन्नम के दरवाजे पर नाम

अै आज के जनाढो और कल के ढर्दूढो ! याद रढिये ! जो गुनाढों पर अडा रड ढोड रास्ता ढूल गया, गङ्गलतो और ढे अ-ढलियों की तारीकियों में ढटक गया और ढुद ढ मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की नाराजियों की सूरत में कड्रो आढिरत के अजाढों में इंस कर रड गया, अढ पढताने और सर पढाडने से कुड ढाथ नढी आअेगा, अढ ढी ढौकअ है जल्ल तर अपने गुनाढों से सख्थी तौढा कर के नढाजों, र-ढजानुल ढुढारक के रोजों और सुन्नतो ढरी जिन्दगी गुजारने का अड्द कर ढीजिये. सुनिये ! सुनिये ! सरकारे ढढीना, राडते कलढो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने ँड्रत निशान है : जो कोँ अेक नढाज ढी कस्दन तर्क कर देगा, उस का नाम जहन्नम के उस दरवाजे पर ढिढ दिया जाअेगा जिस से वोड जहन्नम में दढिढ ढोगा.  
 (1099) حَدِيثُ 299 ص 7 ح 1 (طَبَقَةُ الْأَوْلِيَاءِ) ँसी तरड अेक और ढढीसे पाक में ँशदि ँड्रत

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरद शरीफ़ न पड़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शम्स है. (त्रुम्डी १७० व १७१)

बुन्याद है : जो माहे र-मजान का अेक रोज़ा भी बिला उज़रे शर-ई व मरज़ कज़ा कर देता है तो ज़माने त्बर के रोज़े उस की कज़ा नहीं हो सकते अगर्चे आ'द में रभ भी ले. (त्रुम्डी १७० व १७१)

## आंभों में आग

औरतों को ताडने वालों, अम्रदों के साथ बढ निगाही करने वालों, इल्मिं डिरामे देषने वालों, गाने बाजे और गीबतें सुनने वालों को याहिये के ज़ट तौबा करें वरना यकीनन अज़ाब सखा न जायेगा, मन्कूल है : जो कोई अपनी आंभों को नज़रे डराम से पुर करेगा क्रियामत के रोज़ उस की आंभों में आग त्बर दी जायेगी. (मुक़ाशफ़े अल्कु़ुब १०)

## आग की सलाह

डज़रते अल्लामा अबुल इरज़ अब्दुर्रुडमान बिन ज़ौजी नक़ल करते हैं : औरत के मडासिन (या'नी हुस्नो ज़माल) को देषना ँवलीस के ज़डूर में बुजे हुअे तीरों में से अेक तीर है, जिस ने ना मडरम से आंभ की डिङ्गाजत न की उस की आंभ में बरोजे क्रियामत आग की सलाह ईरी जायेगी. (बज़रु अल्लुमू १७१)

## आंभों और कानों में डील

डज़रते सय्यिदुना ँमाम डाइज़ अबुल क़ासिम सुलैमान त-अरानी قَدَسَ سِرُّهُ التُّورَانِي نक़ल करते हैं : मेरे भीठे भीठे आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अेक मन्ज़र येड भी देषा के कुए लोगों की आंभों और कानों में डील हुके हुअे हैं. आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की षिदमत में अर्ज़ की गई : येड वोड लोग हैं जो वोड देषते हैं जो ँन्हें नहीं देषना याहिये और वोड सुनते हैं जो ँन्हें नहीं सुनना याहिये. (अल्लुमू अल्लुमू १०६ व १०७)

करमाने मुस्तकी علی اللہ تعالیٰ غیب و اللہ وسلم : उस शप्स की नाक पाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुइडे पाक न पढे. (१६)

वालों की आंभों और कानों में कील टुके लुअे हैं. जबरदार ! शैतान के धोके में आ कर टीवी पर जबरें ली न देआ करें के जबरों का बे पर्दा औरतों से पाक होना दुश्वार होता है. याद रभिये ! मर्द औरत को देभे या औरत मर्द को ज शह्वत देभे येह दोनों काम हराम हैं और हर ई'ले हराम जहन्नम में ले जाने वाला काम है. (والعياذ بالله تعالى)

### आंभों में पिघला हुवा सीसा

मन्कूल है : “जो शप्स शह्वत से किसी अज्जन्बिय्या के हुस्नो जमाल को देभेगा कियामत के दिन उस की आंभों में सीसा पिघला कर डाला जायेगा.” (ص २८ ३१४) यकीनन ल्हाली ली अज्जन्बिय्या ही है. जो देवर व जेठ अपनी ल्हाली को कस्टन देभते रहे हों, बे तकल्लुङ्ग बने रहे हों, मजाक मस्भरी करते रहे हों, वोह अद्लाह ऊँके अजाब से उर कर फौरन से पेशतर सय्यी तौबा कर लें. ल्हाली अगर देवर को छोटा ल्हाई और जेठ को बडा ल्हाई कल दे ईस से बे पर्दगी और बे तकल्लुङ्गी जहँज नही हो जाती और देवर व ल्हाली बढ निगाही, आपसी बे तकल्लुङ्गी व हंसी मजाक वगैरा गुनाहों की दलदल में मजीद धंसते चले जाते हैं. याद रभिये ! जेठ और देवर व ल्हाली का आपस में बिला ज़रत व बे तकल्लुङ्गी से गुफ्त-गू करना ली मुसल्लल जतरे की घन्टी बजता रहता है ! ल्हाई ईसी में है के न अेक दूसरे को देभें और न ही आपस में बिला ज़रत और बे तकल्लुङ्गी से बातचीत करें.

देभना है तो मदीना देभिये

कस्रे शाही का नजारा कुछ नही

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

فرمانے مستفی علی اللہ تعالیٰ علیہ وآلہ وسلم : جس نے مجھ پر رोजے جوموآءا دو سو بار دھڑکے پاک پدا उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ होंगे. (क्रمال)

देवर व जेठ और त्वात्मी वगैरा भबरदार रहें के हदीस शरीफ में ईशाद हवा, “الْعَيْنَانِ تَزْنِيَانِ” या’नी आंभें जिना करती हें. (مسند امام احمد ج ३ ص ३०० حديث ८८०२) भडर डाल अगर अेक घर में रहते हउअे औरत के लिये करीबी ना भडरम रिश्तेदारों से पर्दा दुश्वार हो तो येडरा भोलने की तो ईजाजत है मगर कपडे डरगिज जैसे बारीक न हों जिन से भदन या सर के बाल वगैरा यमकें या जैसे युस्त न हों के भदन के आ’जा, जिस्म की हैअत (या’नी सूरत व गोलाई) और सीने का उतार वगैरा जाहिर हो.

### आतश परस्तों जैसी सूरत

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! दाढी मुंडाना या अेक मुट्ठी से घटाना दोनों काम डराम हें. सय्यिदुना ईमाम मुस्लिम رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ نكल करते हें, अद्लाड عَزَّوَجَلَّ के भडभूअ, दानाअे गुयूअ وَسَلَّم صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने ईभ्रत निशान है : “भूँछें भूअ पस्त करो और दाढियों को मुआफी हो (या’नी भढने दो) और भजूसियों (या’नी आतश परस्तों) जैसी सूरत मत बनाओ.” (مسلم ص १०६ حديث २१०) ईस इरमाने वाला शान में मुसल्मान की गैरत को ललकार है, कैसी अज्भो गरीअ बात है के दा’वा भडभूअते मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का करे और शकलो सूरत दुश्मनाने मुस्तफ़ा जैसी बनाअे.

सरकार का आशिक त्मी क्या दाढी मुंडाता है ?

क्यूं ईशक का येडरे से ईजडार नडीं डोता ?

### कौन किस से पर्दा करे ?

पर्दे में रह कर मुजे सुनने वाली ईस्लामी भडनो ! तुम त्मी सुनो ! बे पर्दगी डराम है, गैर मर्दों को अ शह्वत देअना डराम है और ईले डराम जडन्नम में ले जाने वाला काम है. ययाजाद, तायाजाद, झूडीजाद, आलाजाद, भाभूंजाद, ययी, ताई, मुभानी ईन सब का पर्दा है, त्वात्मी

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर दुव्दुद शरीफ़ पढो अल्लाह तुम पर रइमत भेजेगा. (अहमद)

और देवर व जेठ का पदार्थ है, साली और बहनोई का पदार्थ है उता के ना महरम पीर और मुरी-दनी का भी पदार्थ है, मुरी-दनी अपने पीर साखिब का हाथ नहीं चूम सकती, सर के बालों पर मुर्शिद से हाथ नहीं फिरवा सकती, लडकी जब नव बरस की हो उस को पदार्थ शुद्ध करवाँये और लडका जब बारह बरस का हो जाये उसे औरतों से बचाँये.

### ना जायज इशान करने वालों का अन्वाम

सरकारे मदीना, राहते कल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने ईशाद इरमाया : (मे'राज की रात) मैं ने कुछ मर्दों को देखा जिन की आलें आग की केंचियों से काटी जा रही थी, मैं ने कहा : येह कौन हैं ? जिब्रईले अभीन (عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام) ने बताया : येह लोग ना जाँज अश्या से जीनत हासिल करते थे. और मैं ने अक बढबूदार गढा देखा जिस में शोरो गोगा बरपा था, मैं ने कहा : येह कौन हैं ? तो बताया : येह वोह औरतें हैं जो ना जाँज अश्या से जीनत हासिल करती थीं. (تاريخ بغداد ج ١ ص ٤١٥) याद रभिये ! नेल पॉलिश की तह नापुनों पर जम जाती है लिहाजा ऐसी हाहत में वुजू करने से न वुजू होता है न ही नहाने से गुस्ल उतरता है, जब वुजू व गुस्ल न हो तो नमाज भी नहीं होती, ईस्लामी बहनों की बिदमत में मेरा म-दनी भश्वरा है के म-दनी बुरकअ ओढा करें, नीज जैसे दस्तानों और जुराबों का अेहतिमाम इरमाअें जिन में से हाथ पाँउ की रंगत न जलकती हो, गैर मर्दों के आगे अपनी हथेलियां और पाँउ के पन्जे भी हरगिज जाहिर न किया करें.

### कजा उम्मी कर लीजिये

अगर फुदा न प्वास्ता नमाज रोजे रह गये हैं तो उन का हिसाब लगा कर कजा उम्मी इरमा लीजिये, और ताप्पीर की तौबा भी कर लीजिये, नमाज की कजा उम्मी का आसान तरीका मा'लूम करने के लिये दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ किताब, "नमाज के अहकाम" हदिय्यतन हासिल कर लीजिये. ईस में वुजू, गुस्ल, नमाज और



ફરમાને મુસ્તફા ﷺ: મુઝ પર કસરત સે દુરુદ પાક પઢો બશક તુમ્હારા મુઝ પર દુરુદ પાક પઢના તુમ્હારે ગુનાહોં કે લિયે મઠ્ઠિરત હૈ. (મુસ્નૈદ)

કઝા ઉમ્મી વગૈરા કે વોહ અહમ તરીન અહકામ બયાન કિયે ગએ હેં કે પઢ કર શાયદ આપ બોલ ઉઠે, અફસોસ ! અબ તક વુઝૂ વ ગુસ્લ ઓર નમાઝ કી દુરુસ્ત અદાએગી સે મહરૂમી હી રહી હૈ !

إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ

અબ તમામ ઈસ્લામી ભાઈ દિલ કે પકકે અઝ્મ કે સાથ હાથ લહરા લહરા કર **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** કે ફલક શિગાફ ના'રોં કે ઝરીએ અપને મ-દની જઝબાત કા ઈઝહાર કીજિયે. નિચ્યત કીજિયે, અબ મેરી કોઈ નમાઝ કઝા નહીં હોગી. **(إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ)** ર-મઝાનુલ મુબારક કા કોઈ રોઝા કઝા નહીં હોગા. **(إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ)** ફિલ્મોં ડિરામે નહીં દેખૂંગા. **(إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ)** ગાને બાજે નહીં સુનૂંગા. **(إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ)** દાઢી નહીં મુંડવાઊંગા. **(إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ)** એક મુઢી સે નહીં ઘટાઊંગા. **(إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ)**

### દા'વતે ઈસ્લામી કી મ-દની બહાર

આપ સબ દા'વતે ઈસ્લામી કે મ-દની માહોલ સે વાબસ્તા હો જાઈયે, આશિકાને રસૂલ કે મ-દની કાફિલોં મેં બ નિચ્યતે સવાબ સુન્નતોં કી તરબિચ્યત કે લિયે સફર ઓર રોઝાના ફિકે મદીના કે ઝરીએ મ-દની ઈન્આમાત કા રિસાલા પુર કર કે હર મ-દની માહ કે ઈબ્તિદાઈ દસ દિન કે અન્દર અન્દર અપને યહાં કે ઝિમ્મેદાર કો જમ્મ કરવાને કા મા'મૂલ બના લીજિયે, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** દોનોં જહાનોં મેં બેડા પાર હોગા. આઈયે ! આપ કી તરગીબ વ તહરીસ કે લિયે એક મ-દની બહાર સુનતે હેં : **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** આપ કા દિલ ભી જઝબાતે તઅસ્સુર સે સીને કે અન્દર ઝૂમ ઉઠેગા ઓર **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** સીના બાગે મદીના બન જાએગા.

### મુહમ્મદ એહસાન અતારી કા લાશા

બાબુલ મદીના કરાચી કે અલાકે ગુલ બહાર કે એક મોડર્ન નૌ જવાન બનામ મુહમ્મદ એહસાન દા'વતે ઈસ્લામી કે મ-દની માહોલ સે વાબસ્તા

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : જો મુઝ પર એક દુરુદ શરીફ પઢતા હે અલ્લાહ ઊંચે ઊંચે એક કીરાત અજ લખતા હે ઓર કીરાત ઉહુદ પહાડ જિતના હે. (મુવાઝઝ)

હુએ ઓર સગે મદીના ﷺ કે ઝરીએ સરકારે બગદાદ હુઝૂરે ગૌસે પાક રઝી ﷺ કે મુરીદ બન ગએ. સરકારે ગૌસે આ'ઝમ ﷺ કે મુરીદ તો કયા હુએ ઉન કી ઝિન્દગી મેં મ-દની ઇન્કિલાબ બરપા હો ગયા. ઉન કા રુખ એક મુઢી દાઢી કે ઝરીએ મ-દની ચેહરા બન ગયા ઓર સર મુસ્તકિલ તૌર પર સબ્ઝ સબ્ઝ ઇમામે કે તાજ સે સર સબ્ઝો શાદાબ હો ગયા. ઉન્હોં ને દા'વતે ઇસ્લામી કે મદ્ર-સતુલ મદીના (બાલિગાન) મેં કુરઆને પાક નાઝિરા ખત્મ કર લિયા ઓર લોગોં કે પાસ ખુદ જા જા કર નેકી કી દા'વત કી ધૂમેં મયાને ઓર ઇન્ફિરાદી કોશિશ ફરમાને લગે. એક દિન અચાનક ઉન્હેં ગલે મેં દર્દ મહસૂસ હુવા, ઇલાજ ભી કરવાયા મગર “દર્દ બઢતા ગયા જૂં જૂં દવા કી” કે મિસ્દાક ગલે કે મરઝ ને બહુત ઝિયાદા શિદ્દત ઇખ્તિયાર કર લી યહાં તક કે કરીબુલ મૌત હો ગએ, ઇસી હાલત મેં ઉન્હોં ને સગે મદીના ﷺ કા મ-દની વસિયત નામા જો કે મક-ત-બતુલ મદીના સે હદિથ્યતન મિલતા હૈ ઉસે સામને રખ કર અપના “વસિયત નામા” તય્યાર કરવા કર દા'વતે ઇસ્લામી કે અલાકાઈ ઝિમ્મેદાર કે હવાલે કર દિયા ઓર ફિર સદા કે લિયે આંખેં મૂંદ લીં. બ વક્તે વફાત ઉન કી ઉમ્મ તકરીબન 35 સાલ હોગી, ઉન્હેં “ગુલ બહાર” કે કબ્રિસ્તાન મેં સિપુર્દે ખાક કર દિયા ગયા, હસબે વસિયત ઉન કી કબ્ર કે પાસ કમો બેશ બારહ ઘન્ટે તક ઇસ્લામી ભાઈયોં ને “ઇજતિમાએ ઝિકો ના'ત” જારી રખા. વફાત કે તકરીબન સાઢે તીન સાલ બા'દ બરોઝ મંગલ, 6 જુમાદલ આખિરહ 1418 હિ. (7-10-97) કા વાકિઆ હૈ કે એક ઓર ઇસ્લામી ભાઈ મુહમ્મદ ઉસ્માન અત્તારી કા જનાઝા ઉસી કબ્રિસ્તાન મેં લાયા ગયા, કુછ ઇસ્લામી ભાઈ મહૂમ મુહમ્મદ એહસાન અત્તારી عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَارِئِ કી કબ્ર પર ફાતિહા કે લિયે આએ તો યેહ મન્ઝર દેખ કર ઉન કી આંખેં ફટી કી ફટી રહ ગઈ કે કબ્ર કી એક જાનિબ બહુત બડા શિગાફ હો ગયા હૈ ઓર તકરીબન સાઢે

ਫ਼ਰਮਾਨੇ ਮੁਸਤਫ਼ਾ ﷺ : جس نے کیتاબ میں مومن پر دُرُودِ پاک لਿਆ تو جب تک میرا نام اُس میں  
 رہے گا کِشِرتے اُس کے لیے اِستِغْفَار کرتے رہیں گے۔ (ابن ماجہ)

तीन साल कबल वफ़ात पाने वाले मर्दूम मुहम्मद अहसान अत्तारी सर पर  
 सब्ज सब्ज ईमामा शरीफ़ का ताज सजाये भुशबूदार कफ़न ओढे मजे से बैठे  
 हुअे हैं. आनन झानन येह ज़बर डर तरफ़ डैल गई और रात गअे तक  
 लोग मुहम्मद अहसान अत्तारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَارِي के कफ़न में लिपटे हुअे  
 तरो ताजा लाशे की ज़ियारत करते रहे. तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की  
 आलमगीर गैर सियासी तहरीक, दा'वते इस्लामी के बारे में गलत झहमियों  
 का शिकार रहने वाले बा'ज अफ़राद भी दा'वते इस्लामी वालों पर अद्वालड  
 كَرُورُ के इस अजीम झल्लो करम का ખुली आंખों से मुशा-हदा कर के  
 तहसीन व आफ़रीन पुकार उठे और दा'वते इस्लामी के मुहिब बन गअे.

જો अपनी जिन्दगी में सुन्नतें उन की सजाते हैं

ਖੁਦਾ ਵ ਮੁਸਤਫ਼ਾ ਅਪਨਾ ਉਠੇਂ ਪਧਾਰਾ ਬਨਾਤੇ ਹੈਂ

### शहीदे दा'वते इस्लामी

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! येह कोई नया वाकिआ नहीं शायद  
 आप को याद होगा के 25 र-जबुल मुरज्जब 1416 सि.हि. को मर्कजुल  
 औलिया लाहोर में सुन्नतों के अदना फादिम सगे मदीना غُفِي عِنَّا की ज्ञान  
 लेने की कोशिश के नतीजे में दा'वते इस्लामी के दो मुबद्लिगीन डाज्ज उहुद  
 रजा अत्तारी और मुहम्मद सज्जद अत्तारी رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَارِي शहीद हुअे थे.  
 तकरीबन आठ माड के बा'द मर्कजुल औलिया में डोने वाली शहीद  
 बारिशों के नतीजे में शहीदे दा'वते इस्लामी डाज्ज उहुद रजा अत्तारी  
 عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَارِي की कब्र मुन्डदिम डो गई थी, जब मजबूरन कब्र कुशाई की  
 गई तो उन की लाश बिदकुल तरो ताजा बरआमद हुई और कई लोगों की  
 डालिरी में शहीदे दा'वते इस्लामी को दूसरी कब्र में मुन्तकिल किया गया था.  
 आपिर में मेरी तमाम इस्लामी भाईयों और इस्लामी बडनों से म-दनी  
 इत्तिजा है के दा'वते इस्लामी के सुन्नतों तरे म-दनी माडोल से डर दम

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज्ज पर अक बार दुर्रद पाक पढा अल्लाह उस पर दस रदमतें बेजता है. (مسلم)

वाबस्ता रहिये. द्वा'वते इस्लामी में कोई मेम्बर शिप नही है, आप अपने यहाँ होने वाले “द्वा'वते इस्लामी” के हज़तावार सुन्नतों तरे इजतिमाअ में पाबन्दी से शिकत और सुन्नतों की तरबियत के म-दनी काङ्गिलों में आशिकाने रसूल के साथ सफ़र इरमाया करें, सभी को याहिये के अपने अपने शो'बे में भूष सुन्नतों के म-दनी कूल लुटाअें और नेकी की द्वा'वत की धूमें मयाअें.

भीठे भीठे इस्लामी त्वाइयो ! बयान को इप्तिताम की तरफ़ लाते हुअे सुन्नत की इज़ीलत और यन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआदत हासिल करता हूं. ताजदारे रिसालत, शह-शाहे नुबुव्वत, मुस्तफ़ा जाने रदमत, शम्मे बजमे हिदायत, नोशअे बजमे जन्नत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मडब्बत की उस ने मुज्ज से मडब्बत की और जिस ने मुज्ज से मडब्बत की वोड जन्नत में मेरे साथ होगी. (ابن عساکر ج ٩ ص ٣٤٣)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आका

जन्नत में पडोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

“अर्ये का अकीका करना सुन्नते मुभा-रका है” के पर्यीस

दुर्रद की निरबत से अकीके के 25 म-दनी कूल

❖ इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : “लडका अपने अकीके में गिरवी है सातवें दिन उस की तरफ़ से जानवर जड्ड किया जाअे और उस का नाम रभा जाअे और सर मूंडा जाअे.” (ट्रुमिड ज ३ व १७७ हदिथ १०२७) गिरवी होने का मतलब येड है के उस से पूरा नफ़अ हासिल न होगी जब तक अकीका न किया जाअे और बा'ज (मुहदिसीन) ने कडा अर्ये की सलामती और उस की नशवो नुमा (इलना कूलना) और उस में अर्ये औसाइ (या'नी उम्दा भूबियां) होने अकीके के साथ वाबस्ता हैं (बहारे शरीअत, जि. 3, स. 354)

इरमाने मुस्तक। حَسْبِيَ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَعَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जो शप्स मुज पर दुर्रुदे पाक पढना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया. (طبرانی)

❖ बय्या पैदा होने के शुक्रिया में जो जानवर ज़ब्त किया जाता है उस को अकीका कहते हैं (अज़न, स. 355) ❖ जब बय्या पैदा हो तो मुस्तहब यह है के उस के कान में अज़ान व ईकामत कही जाये. अज़ान कहने से **بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ** बलाअें दूर हो जाअेंगी ❖ बेहतर यह है के दहने (या'नी सीधे) कान में यार मर्तबा अज़ान और बाअें (या'नी उलटे) में तीन मर्तबा ईकामत कही जाये ❖ बहुत लोगों में यह रवाज है के लउका पैदा होता है तो अज़ान कही जाती है और लउकी पैदा होती है तो नहीं कहते. यह न याहिये बल्के लउकी पैदा हो जब भी अज़ान व ईकामत कही जाये ❖ सातवें दिन उस का नाम रखा जाये और उस का सर मूंडा जाये और सर मूंडने के वक्त अकीका किया जाये. और बालों को वज़न कर के उतनी यांदी या सोना स-दका किया जाये (अज़न, स. 355) ❖ लउके के अकीके में दो बकरे और लउकी में एक बकरी ज़ब्त की जाये या'नी लउके में नर जानवर और लउकी में मादा मुनासिब है. और लउके के अकीके में बकरियां और लउकी में बकरा किया जब भी हरज नहीं (अज़न, स. 357) ❖ (बेटे के लिये दो की) ईस्तिताअत (या'नी ताकत) न हो तो एक भी काई है (इतावा र-जविय्या, जि. 20, स. 586) ❖ कुरबानी के ठांट वगैरा में अकीके की शिर्कत हो सकती है ❖ अकीका इर्ज या वाजिब नहीं है सिर्फ सुन्नते मुस्तहबबा है, (अगर गुन्जार्श हो तो ज़रूर करना याहिये, न करे तो गुनाह नहीं अलबत्ता अकीके के सवाब से महज़ुमी है) गरीब आदमी को हरगिज ज़ार्ज नहीं के सूदी कर्ज ले कर अकीका करे (ईस्लामी जिन्दगी, स. 27) ❖ बय्या अगर सातवें दिन से पहले ही मर गया तो उस का अकीका न करने से कोई असर उस की शफ़ाअत वगैरा पर नहीं, के वोह वक्ते अकीका आने से पहले ही गुजर गया. हां जिस बय्ये ने अकीके का वक्त पाया या'नी सात दिन का हो गया और बिला उज़र भा वरई ईस्तिताअत (या'नी ताकत होने के बा वुजूद)

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ: جَسَى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुइदे पाक न पढा तउकीक वोह बढे बप्ते हो गया. (उंन)

ઉસ કા અકીકા ન ક્રિયા ઉસ કે લિયે યેહ આયા હૈ કે વોહ અપને માં બાપ કી શફાઅત ન કરને પાએગા (ફતાવા ર-ઝવિયા, જિ. 20, સ. 596) ❀ અકીકા વિલાદત કે સાતવેં રોઝ સુન્નત હૈ ઓર યેહી અફઝલ હૈ, વરના ચૌદહવેં, વરના ઈકકીસવેં દિન. (એઝન, સ. 586) ઓર ❀ અગર સાતવેં દિન ન કર સકેં તો જબ ચાહેં કર સકતે હેં, સુન્નત અદા હો જાએગી (બહારે શરીઅત, જિ. 3, સ. 356) ❀ જિસ કા અકીકા ન હુવા હો વોહ જવાની, બુઢાપે મેં ભી અપના અકીકા કર સકતા હૈ (ફતાવા ર-ઝવિયા, જિ. 20, સ. 588) જૈસા કે રસૂલુલ્લાહ ﷺ ने એ'લાને નુબુવ્વત કે બા'દ ખુદ અપના અકીકા ક્રિયા (مُصَنَّف عبد الرزاق ج ٤ ص ٢٥٤ حديث ٢١٧٤) ❀ બા'ઝ (ઉ-લમાએ કિરામ) ને યેહ કહા કે સાતવેં યા ચૌદહવેં યા ઈકકીસવેં દિન યા'ની સાત દિન કા લિહાઝ રખા જાએ યેહ બેહતર હૈ ઓર યાદ ન રહે તો યેહ કરે કે જિસ દિન બચ્ચા પૈદા હો ઉસ દિન કો યાદ રખેં ઉસ સે એક દિન પહલે વાલા દિન જબ આએ તો વોહ સાતવાં હોગા, મ-સલન જુમુઆ કો પૈદા હુવા તો (ઝિન્દગી કી હર) જુમા'રાત (ઉસ કા) સાતવાં દિન હૈ. (બહારે શરીઅત, જિ. 3, સ. 356) અગર વિલાદત કા દિન યાદ ન હો તો જબ ચાહેં કર લીજિયે ❀ બચ્ચે કા સર મૂંડને કે બા'દ સર પર ઝા'ફરાન પીસ કર લગા દેના બેહતર હૈ (એઝન, 357) ❀ બેહતર યેહ હૈ કે અકીકે કે જાનવર કી હડી ન તોડી જાએ બલ્કે હડિયોં પર સે ગોશત ઉતાર લિયા જાએ યેહ બચ્ચે કી સલામતી કી નેક ફાલ હૈ ઓર હડી તોડ કર ગોશત બનાયા જાએ ઈસ મેં ભી હરજ નહીં. ગોશત કો જિસ તરહ ચાહેં પકા સકતે હેં મગર મીઠા પકાયા જાએ તો બચ્ચે કે અપ્લાક અચ્છે હોને કી ફાલ હૈ. (એઝન) મીઠા ગોશત બનાને કે દો તરીકે : ❀ 1) એક કિલો ગોશત, આઘા કિલો મીઠા દહી, સાત દાને છોટી ઈલાએચી, 50 ગ્રામ બાદામ, હસ્બે ઝરૂરત ઘી યા તેલ સબ મિલા કર પકા લીજિયે, પકને કે બા'દ ઝરૂરત કે મુતાબિક ચાશની ડાલિયે.



करमाने मुस्तफ़ा : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْوَسْمُ : जिसने मुज पर एक बार दुर्रदे पाक पढा अल्लाह उरुज पर एस रडमतें बेजता है. (स्)

जीनत (या'नी भूष सूरती) के लिये गाजर के बारीक रेशे बना कर नीज किशमिश वगैरा भी डाले जा सकते हैं ﴿2﴾ एक किलो गोशत में आधा किलो युकन्दर डाल कर हरे मा'मूल पका लीजिये ❀ अवाम में येड बहुत मशहूर है के अकीके का गोशत बर्ये के मां बाप और दादा दादी, नाना नानी न भाअें येड महुज गलत है एस का कोई सुभूत नहीं (अैज्ज) ❀ एस की पाल का वोही हुकम है जो कुरबानी की पाल का है, के अपने सर्ई में लाअे या मसाकीन को दे या किसी और नेक काम मस्जिद या मद्रसे में सर्ई करे (अैज्ज) ❀ अकीके का जानवर उन्हीं शराईत के साथ होना याहिये जैसा कुरबानी के लिये होता है. उस का गोशत कु-करा और अजीजो करीब दोस्त व अहबाब को कय्या तकसीम कर दिया जाअे या पका कर दिया जाअे या उन को बतौरे जियाइत व दा'वत भिलाया जाअे येड सब सूरतें जाईज हैं (बहारे शरीअत, जि. 3, स. 357) ❀ (अकीके का गोशत) यील, कव्वों को भिलाना कोई मा'ना नहीं रभता, येड (या'नी यील, कव्वे) इंसिक हैं (इतावा र-जविय्या, जि. 20, स. 590) ❀ अकीका शुके विलादत है लिलाज मरने के बा'द अकीका नहीं हो सकता ❀ लउके के अकीके में के बाप जभु करे दुरआ यूं पढे :

اللَّهُمَّ هَذِهِ عَقِيْقَةُ ابْنِي فُلَانٍ دَمُّهَا بِدَمِّهِ وَلَحْمُهَا بِلَحْمِهِ وَعَظْمُهَا بِعَظْمِهِ وَجِلْدُهَا بِجِلْدِهِ وَسَعْرُهَا بِسَعْرِهِ اللَّهُمَّ اجْعَلْهَا فِدَاءً لِابْنِي مِنَ النَّارِ بِسْمِ اللَّهِ الْكَبْرِ۔  
 हुलां की जगड बेटे का जो नाम रभता हो ले बेटी हो तो दोनों जगड **ابْنِي** की जगड **بْنِي** और पांयों जगड **ه** की जगड **ها** कहे और दूसरा शप्स जभु करे तो दोनों जगड **فُلَانِ** या **بْنِي فُلَانٍ** की जगड **فُلَانِ** مدینہ

1 : तरजमा : अै अल्लाह उरुज ! येड मेरे हुलां बेटे का अकीका है एस का भून उस के भून, एस का गोशत उस के गोशत एस की लडी उस की लडी, एस का यमडा उस के यमडे और एस के बाल उस के बाल के बदले में हैं, अै अल्लाह ! एस को मेरे बेटे के लिये जहन्नम की आग से इिदया बना दे. अल्लाह उरुज के नाम से, अल्लाह सब से बडा है.

ईरमाने मुस्तका علی اللہ تعالیٰ علیه و آله وسلم : जो शप्स मुज पर दुइदे पाक पढना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया. (ज़रान)

या **فَلَانَهُ بِنْتِ فَلَانَهُ** कहे. बय्ये की उस के बाप और लडकी की उस की मां की तरफ़ निस्मत करे (मुलज्जस अज इतावा र-जविय्या, जि. 20, स. 585)  अगर दुआ याद न हो तो बिगैर दुआ पढे दिल् में येह भयाल कर के, के हुलां लडके या हुलानी लडकी का अकीका है, **بِسْمِ اللَّهِ الْكَبْرُ** पढ कर जल्ह कर दे अकीका हो जायेगा, अकीके के लिये दुआ पढना ज़रूरी नहीं (जन्नती जेवर, स. 323)  आज कल उमूमन अकीके के लिये द्वा'वत का ओडतिमाम कर के अजीओ अकारिब को बुलाया जाता है जो के अय्यल अमल है और शिर्कत करने वाले बय्ये के लिये तोहफ़े लाते हैं येह भी उम्दा काम है. अलबत्ता यहां कुछ तर्फ़सील है : अगर मेहमान कुछ तोहफ़ा न लाये तो भा'ज अवकात मेजबान या उस के घर वाले मेहमान की बुराई करने के गुनाहों में पडते हैं, तो जहां यकीनी तौर पर या जन्ने गालिब से ऐसी सूरते डाल हो वहां मेहमान को याहिये के बिगैर मजबूरी के न जाये, ज़रूरतन जाये और तोहफ़ा ले जाये तो डरज नहीं, अलबत्ता मेजबान ने ईस निख्यत से लिया के अगर मेहमान तोहफ़ा न लाता तो येह या'नी मेजबान ईस (मेहमान) की बुराईयां करता या बतौरे फ़ास निख्यत तो नहीं मगर ईस (मेजबान) का ऐसा बुरा मा'मूल है तो जहां ईसे (या'नी मेजबान को) गालिब गुमान हो के लाने वाला ईसी तौर पर या'नी (मेजबान के) शर से बयने के लिये लाया है तो अब लेने वाला मेजबान गुनहगार और अजाबे नार का डकदार है और येह तोहफ़ा ईस के डक में रिश्वत है. हां अगर बुराई भयान करने की निख्यत न हो और न ईस का ऐसा बुरा मा'मूल हो तो तोहफ़ा कबूल करने में डरज नहीं.

डजारों सुन्नतें सीपने के लिये मक-त-भतुल मदीना की मत्बूआ दौ कुतुब (1) 312 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब "बडारे शरीअत" छिस्सा 16 और (2) 120 सफ़हात की किताब "सुन्नतें और आदाब" डदिय्यतन डसिल कीजिये और पढिये. सुन्नतों की तरबिय्यत का



کرمائے مؤسٹفہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ وسلم: جس کے پاس مہرا لیکر ہوا اور اُس نے مؤج پر دڑدے پاک ن پدا تلککک  
 وول بء باپن ڈو گیا. (ابن قین)

اےک بےلتری ن جریا دا'وتے اِسلامی کے م-دنی کافیلوں مے آاشیکانے  
 رسؤل کے ساٹھ سؤننوں لمرہ سکر لہی ہے.

لؤٹنے رلمتے کافیلے مے یلو سلیپنے سؤننوں کافیلے مے یلو  
 ڈوگی دل مؤشیکلے کافیلے مے یلو پتم ڈوں شامتے کافیلے مے یلو

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلٰی مُحَمَّد

کے لرس

دڑد شاریک کی کئی لول	1	آاںوں اور کانون مے کیل	11
سونه کی اِٹ	1	آاںوں مے پلھلا ہوا سلیسا	12
گفیلت کے اسربا ب	2	آاٹش پارسوں جیسی سورت	13
مؤدے کی سلیپو پوکار بےکار ہے	3	کون کس سے پدا کرے ?	13
آنوہلی ندامت	6	نا جالڈ کیشن کرنے والوں کا انجم	14
رولٹا ہوا داہیلے جلمنم ڈوگا	6	کلا اڈی کر لیجیے	14
اگر اِمان برباڈ ڈو گیا لو.....	7	اِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ	15
مؤت کے لی ن کاسیڈ	8	دا'وتے اِسلامی کی م-دنی بڈار	15
ہلی ماری لہی مؤت کا کاسیڈ ہے	9	مؤلممڈ اےلسان آٹاری کا لاشا	15
جلمنم کے دے والے پر نام	10	شلیڈے دا'وتے اِسلامی	17
آاںوں مے آاگ	11	آکیکے کے 25 م-دنی کؤل	18
آاگ کی سلاڈ	11	☆☆☆	

ماخذ و مراجع

مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ	کتاب
دارالقریہ روت	ابن صسا کر	دارالقریہ روت	ترمذی
دار احیاء التراث العربی بیروت	ہدایہ	دارالقریہ روت	مسند امام احمد
رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور	فتاویٰ رضویہ	دار ابن ترمذی بیروت	مسلم
مکتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی	بہار شریعت	دارالکتب العلمیہ	مؤصّف عبدالرزاق
دارالکتب العلمیہ	مکافئہ القلوب	دار احیاء التراث العربی بیروت	مجم کبیر
مکتبہ دار الفکر	بجر الدموع	دارالکتب العربی بیروت	فردوس الاخیار
مکتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی	اسلامی زندگی	دارالکتب العلمیہ	حلیہ الاولیاء
مکتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی	حقی زیور	دارالکتب العلمیہ	تاریخ بغداد

## سुन्नत की ज़हारे

رَبِّهِمْ مُحَمَّدٌ ﷺ तब्दीये कुरआनो सुन्नत की आलमगीर और सिपासी तहरीक दा'वते ईस्लामी के मसके मसके म-दनी मासोल में ब कसरत सुन्नतों सीपी और सिपाई ज़ती हैं, हर जुमा'रात ईशा की नमाज़ के आ'द आप के शहर में छोने वाले दा'वते ईस्लामी के छफ़तावार सुन्नतों भरे ईजतिमाअ में रिज़ाअे ईलाही के लिये अथरी अथरी निधयतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी ईख़िज़ा है. आशिक़ाने रसूल के म-दनी काफ़िलों में ब निधयते सवाब सुन्नतों की तरबिधयत के लिये सफ़र और रोज़ाना क़िके मदीना के ज़रीअे म-दनी ईन्आमात का रिस्वाला पुर कर के हर म-दनी मास के ईम्निदाई हस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को ज़अ करवाने का भा'भूल बना लीज़िये, رَبِّهِمْ مُحَمَّدٌ ﷺ ईस की ब-र-क़त से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की ख़िक़ाज़त के लिये हुक़ने का ज़ेहू्न बननेगा.

हर ईस्लामी भाई अपना येह ज़ेहू्न बनाअे के "मुअे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की ईस्वाह की कोशिश करनी है. رَبِّهِمْ مُحَمَّدٌ ﷺ" अपनी ईस्वाह की कोशिश के लिये "म-दनी ईन्आमात" पर अमल और सारी दुन्या के लोगों की ईस्वाह की कोशिश के लिये "म-दनी काफ़िलों" में सफ़र करना है. رَبِّهِمْ مُحَمَّدٌ ﷺ



### म-द-त-अतुल मदीना की शापें

सुरत : वखियाभाई मस्जिद, ज्वाज़र दाना दरगाह के पास.

ज़मनगर : पांच डाटडी

भोडासा : सुका अज़र

गांधीधाम : सपना नगर, मदीना मस्जिद के पास

धोबका : ताज़दारे मदीना मस्जिद के सामने, टावर बाज़ार

**म-द-त-अतुल मदीना**

दा'वते ईस्लामी



ईमामे मदीना, श्री डोलिया जगीये के सम्भे, गिरगापुर, राहमदख़ाणाए, गुज़रात, इंडिया  
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net